करके अपनी दया दृष्टि यह जो चाहे करवा सकता है।
इक नन्हीं सी चींटी से ही हाथी को मरवा सकता है।
हाथ गुरु का जिसके सिर पर जग से किंचित डरता नहीं।
ऐसे सेवक का भी सेवक मृत्यु भय से डरता नहीं।
प्रभु की इच्छा यदि न होवे जग यह सकता मार नहीं।
हाथ प्रभु के जीत हार है जग से सकता हार नहीं।
बेमुख मूरख सोच में डूबा सोच ने इस को मार दिया।
'अवतार' कहे वह मरे न जन्मे जिस ने नाम चितार लिया।

साध संगत प्यार से कहना धन निरंकारी जी जिसके सिर पर हाथ यह रखें जो चाहे करवा सके एक छोटी सी चींटी से भी हाथी को मरवा सकता,
भरे जहान में तुम सा नजर नहीं आता।
कोई भी आपसे अच्छा नजर नहीं आता।
हुजर जो पास तो बेगाने भी बने अपने।
अपने वगर ना तो अपना भी अपना नजर नहीं आता।
कोई तो खुदा को भी बंदों में ढूंढ लेता है
किसी को बंदा भी बंदा नजर नहीं आता।

सतसंगत यह ईश्वर हम पर कृपा करता है और वह जो चाहे कर सकता है लेकिन हमारा भी एक फर्ज होता है कि हम उसकी बात को माने परमात्मा की बात को माने हम परमात्मा को पूरे समर्पण हो जाए और तू ही करने वाला है यह विश्वास को दृढ़ करते चले जाए साध संगत एक होता है कॉन्फिडेंस और एक होता है गॉडफिडेंस कॉन्फिडेंस को पता नहीं है कि वह सक्सेस होगा कि नहीं वह सफल होगा कि नहीं, मैं कर लूंगा और सफल होने का प्रयास करूंगा कॉन्फिडेंस यह कहता है कॉन्फिडेंस को अपना भविष्य पता नहीं, दूसरा जोडफिडेंस जो छठी इंद्रिय होता है आदमी की ऐसे पांच इंद्रियां होती है लेकिन यह गॉडफिडेंस से छठी इंद्रियां होता है जो सब कुछ देख लेता है गॉडफिडेंस जो होता है उसे पता होता है अपना भविष्य के मेरा ईश्वर मेरे लिए मैं वह जो सब कुछ चाहूंगा वह पूरा होगा और मेरा ईश्वर मेरे लिए सब वह करेगा तो यह ईश्वर के ऊपर श्रद्धा और विश्वास की बात है हमें भी रखना चाहिए श्रद्धा और विश्वास परमात्मा को तब जाकर सफलता मिलती है तब जाकर रुके हुए कार्य होते हैं तब जाकर हम धरती पर वरदान बनेंगे लेकिन यह गॉडफिडेंस बढ़ेगा कैसे तो हमें सब कार्य में ईश्वर के साथ बात करनी चाहिए हम बात करना सीखे
पहले ईश्वर को बताएँ..
जैसे ही आपके मन में कोई सपना/योजना उभरे, ईश्वर से बात करें कि आप उसे पूरा करने के लिए कितने उत्साहित हैं।
ध्यान रखें कि आप अपनी योजनाओं के बारे में आस-पास किसी से डींगें न मारें या न ही उनके बारे में बात करें।
एक फलदायी सपने के लिए, पहले ईश्वर को बताएँ।
उसे ईश्वर को सौंप दें। वह उसे आपके लिए पूरा करेगा।
वह रुकावटों को दूर करेगा और आपके लिए रास्ता तैयार करेगा।
"जो कुछ तू करे उसे यहोवा पर छोड़ दे, और वह तेरी योजनाओं को सिद्ध करेगा" नीतिवचन 16:3
पीछे हट जाओ, ईश्वर को गाड़ी चलाने दो।
विश्वास तब शुरू होता है जब आपकी योग्यता समाप्त हो जाती है।
जब आप किसी कठिन परिस्थिति का सामना करते हैं, तो ईश्वर से यह पूछने के बजाय कि
"मैं क्या करूँगा?"
उससे पूछो कि "वह" आपके लिए क्या करेगा।

जब हम पीछे हटते हैं, तभी वह गाड़ी चलाता है।
जब विश्वास नहीं होता, तो ईश्वर चमत्कार नहीं कर सकते!
ईश्वर की सर्वशक्तिमान की बात समुद्र वाली दो बातें हैं एक के मूसा की जो समुद्र के बीच में से रास्ता मिला और निकल गए और दूसरे भगवान राम की बात तो उन्होंने समुद्र को पूजा की प्रार्थना की और जब माना नहीं बाद में उन्होंने बाण चढ़ाया तब जाकर वह समुद्र डरा कहने का भाव ईश्वर शक्तिमान और इसका आदेश प्रकृति को मानना ही है बहुत छोटी चींटी को अगर आशीर्वाद दे देगा तो हाथ भी चींटी के सामने टिक नहीं पाएगा समस्त मनुष्य समस्त जीव समस्त प्रकृति सभी देवी देवता यह परमात्मा यह सद्गुरु के हुकुम के गुलाम है और गुरु हुकम करता है सबको मानना ही पड़ता है जब इबलिश ने खुदा की बात मानी नहीं तो वह फरिश्ते से एक आम आदमी हो गया बेदखल कर दिए गया फरिश्ते तो यह देवत्व को भी छीन लेता है जो उसकी बात नहीं मानता खुदा ने कहा के झुको यह मानव में मैं बसता हूं तो वह झुका नहीं और बेदखल हो गया फरिश्ते से साध संगत अगर हम भी यही करेंगे समर्पण नहीं करेंगे, तो हम भी ईश्वर की तरफ नहीं बढ़ सकते और ईश्वर की बात नहीं मानेंगे तो हम मुक्त कैसे हैं हम भी यहा किसी को झुकेंगे नहीं हमारे अहंकार के कारण तो फिर कैसे हमें ईश्वर अपने साथ मिलायेगा मुक्ति देगा तो जरूरी है समर्पण और श्रद्धा और विश्वास हमारे लिए सब कुछ करने को तैयार हे वह ईश्वर लेकिन हम ही ईश्वर की कृपा में बाधा बनते हैं और काम नहीं होता
सतसंगत यह ईश्वर परमात्मा की कृपा जब हो जाती है जिस भी जीव वह जीव समझो सर्वशक्तिमान बन जाता है या यूं कहें कि ईश्वर अपने साथ एक ही कर देता है बहुत से ऐसे डाखले हैं कि यह ईश्वर की कृपा से वह बंदा असक्य काम भी शक्य कर देता है जैसे बात करें इजरायली गुरु मूसा की परमेश्वर ने उन्हें आदेश दिया कि यह सब मेरे बंदों को लेकर आप समुद्र को पार करके सब की रक्षा करें लेकिन उनको लगा कि मैं समुद्र कैसे पार कर सकता हूं तब परमेश्वर ने कहा की तू मेरी कृपा से आराम से यह समुद्र को पार कर जाएगा बट जाएगा और आप बीच में से चले जाना सबको लेकर और परमेश्वर की बात पर उन्होंने श्रद्धा रखी विश्वास रखा और वह पार हो गए

जिस सिख योद्धा की आप बात कर रहे हैं, उनका नाम बाबा दीप सिंह जी है। यह कहानी सिख इतिहास में अद्भुत शौर्य और श्रद्धा का प्रतीक है, जिसमें बाबा दीप सिंह जी ने अपना सिर कटने के बाद भी युद्ध जीतकर अपने हाथ में अपने कटा हुआ सिर लेकर अमृतसर स्थित श्री हरमंदिर साहिब (स्वर्ण मंदिर) तक पहुँचे थे
कौन थे बाबा दीप सिंह जी?
- बाबा दीप सिंह जी सिखों के महान योद्धा, विद्वान और धर्म-रक्षक थे, जिनका जन्म 1682 में पंजाब में हुआ था
- इन्होंने गुरु गोबिंद सिंह जी से दीक्षा (अमृत) प्राप्त की थी और उनकी आज्ञा से श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सेवा-रक्षा एवं सिख धर्म की रक्षा के लिए समर्पित रहे

पूरी कहानी कैसे शुरू हुई?
- 1757 में, जब अहमद शाह अब्दाली की सेना ने श्री हरमंदिर साहिब (स्वर्ण मंदिर) को अपवित्र किया और उसकी बेअदबी की, तब बाबा दीप सिंह जी ने प्रण लिया कि वे अपना सिर दरबार साहिब में चढ़ाएंगे
- उन्होंने सिख सेनाओं को संगठित किया और अमृतसर की ओर कूच किया।
- 'गरोवल' नामक स्थान पर आपके और अब्दाली के सेनापति जमाल शाह के बीच भीषण युद्ध हुआ[3]।

कटा सिर लेकर युद्ध कैसे लड़ा?
- यमक युद्ध के दौरान बाबा दीप सिंह जी की गर्दन पर तलवार का घातक वार हुआ और उनका सिर लगभग धड़ से अलग हो गया।
- 'किंवदंती' के अनुसार, जैसे ही एक सिख सैनिक ने उन्हें उनकी प्रतिज्ञा की याद दिलाई, बाबा दीप सिंह जी अपनी फौलादी इच्छा-शक्ति से उठे, अपना सिर हथेली पर रखा और दूसरे हाथ में तलवार लेकर रणभूमि में दुश्मनों का विध्वंस करते हुए आगे बढ़ते गए
- यह देख शत्रु दल भयभीत होकर भागने लगे, और सिखों की विजय हुई।

विजय के बाद क्या हुआ?
- बाबा दीप सिंह जी श्री हरमंदिर साहिब (स्वर्ण मंदिर) पहुँचे और अपने कटा हुआ सिर वहां चढ़ा दिया, इस प्रकार अपने प्रण को पूरा किया और वीरगति को प्राप्त हुए[3][4]।
- इस बलिदान ने सिख पंथ में अदम्य साहस, श्रद्धा और धर्म-रक्षा हेतु प्रेरणा पैदा की
इस कहानी का महत्व
- यह घटना न सिर्फ सिख धर्म, बल्कि सम्पूर्ण भारतीय इतिहास में बलिदान, वीरता और विश्वास की एक महान मिसाल है
- आज भी हरमंदिर साहिब परिसर में बाबा दीप सिंह जी का स्मारक सिख श्रद्धालुओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है[3]।

जब तक भी यह आप न चाहे मारे जग की हिम्मत ना जीना मरना हाथ उसी के और किसी की ताकत ना

ऐसे बंदे महान हो जाते हैं मौत के बाद में बाबा दीप सिंह जैसे और ऋषि कमल जी जैसे इन्हें कोई मार ही नहीं सकता क्योंकि सद्गुरु की कृपा हो गई है अमर हो गए हैं ऐसे महान संत और आज भी याद किए जाते हैं सबके दिलों में स्थान है ऐसे महात्माओं का सबके हृदय में अमर है वह ऋषि कमल जी की बात करें तो एक महात्मा गन्नौर हरियाणा के रामचंद्र जी नामकरण के लिए आया और ऋषि कमल जी ने सद्गुरु का ध्यान करके कहा कि वह लड़के का नाम डॉक्टर सतीश रखें और वह चौंक गए और राशिद में भी ऋषि कमल जी ने डॉक्टर सतीश लिखा रामचंद्र जी ने सवाल किया कि अपने लड़के के नाम के आगे डॉक्टर क्यों लिखा क्यों आपने डॉक्टर कहा तब ऋषि जी ने उत्तर दिया मैं नहीं लिखा मेरे द्वारा लिखाया गया है आज 25 वर्ष बाद वही डॉक्टर सतीश लंदन में कार्यरत है एक प्रसिद्ध एमडी डॉक्टर है जिसका निरंकारी विवाह 17 तारीख 12 महीना 2006 को यूक्रेन के देश सोवियत रूस की हैना नाम की लड़की के साथ गन्नौर में ही हुआ इस विवाह का समाचार भी प्रयास सभी समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ था तो साध संगत यह है गुरु की कृपा और ऐसे शिष्य का विश्वास ने सभी शब्दों को सत्य कर दिया सभी बातों को सत्य कर दिया एक आशीर्वाद के रूप में ऐसे महान संत पृथ्वी पर वरदान के रूप में हमें मिलते हैं दूसरी बात ऋषि जी की है उनके पास एक माताजी आई और कहने लगी मेरी भैंस खो गई है और आप आशीर्वाद दो क्योंकि आपके वचन सत्य होते हैं आप जी ऐसा कहे कि यह भैंस अभी यहां पर आ जाए हम दोनों जिस जगह पर है ऋषि कमल जी ने कहा आपकी भैंस घर पर आ जाएगी आप जाइए लेकिन वह मनी नहीं माताजी और कहने लगी नहीं मुझे अभी यहां ही चाहिए तब बात करते-करते माता जी का लड़का आ गया और कहने लगा चलो माताजी घर पर भैंस आ गई है तो साथ संगत यह होता है एक गुरुशिख गुरु के प्रति प्रेम और गुरु भी वह प्रेम को बनाए रखता है सिख का सब ध्यान रखता है सिख की लाज रखता है
सब बातें यहां गुरु की कृपा से आशीर्वाद से विश्वास से सत्य हो जाती है माया मिल जाती है हम सुखी हो जाते हैं सब तरीके से लेकिन हमें भी ध्यान रखना पड़ेगा की फिर हम माया मांग के माया में ना फंस जाए यहां तो सब मांगे पूरी होती है
घटना सेठ कृष्ण लाल जी और बहन शीला जी उनकी धर्मपत्नी की है। यह दोनों गुरु घर के प्रेमी थे। मगर आर्थिक सुखों से अक्सर वंचित रहते थे। एक दिन इस दंपति ने हुजूर सच्चे पाशाह जी से आशीर्वाद मांगा कि माया खुली दीजिए ताकि परिवार रिश्तेदार और संगतों पर दिल खोलकर इस्तेमाल कर सकें। अब कभी तो सत्संग जाने से कतराते हैं और कभी रिशेदारी निभाने में पीछे रह जाते हैं। जिस कारण आंखें नीची करनी पड़ती हैं। हमारे रिश्तेदार जब मिलते हैं तो हमेशा यही कहते हैं भाई जो भी निरंकारी बनता है देखते ही देखते उसकी तकदीर बदल जाती है। सद्गुरु तो दयालु होता ही है। बाबा जी ने सहज भाव से फरमाया आप निरंकार का ध्यान करो। अपनी नेक कमाई में से सेवा करते रहो। दातार रहमत करेगा। सद्गुरु का वचन अटल होता है। दातार की रहमत से उनके दिन बदलने लगे। पहले साल तो उसी प्रकार सत्संग में आते रहे। पर फिर धीरे-धीरे उनकी गैर हाजिरी बढ़ती चली गई। सेठ साहब की सत्संग से गैर हाजिरी उनकी पत्नी शीला जी को भी खटकती थी। समय बीतता गया। लगभग 3 साल बीत गए। एक दिन शीला जी जबरदस्ती उन्हें सेठ कृष्ण लाल जी को बाबा जी के दर्शन करवाने के लिए निरंकारी

कोठी में ले आए। उन्होंने

आते ही दास से कहा, >> मैं बहुत मुश्किल से इन्हें साथ लेकर आई हूं। कृपा करके बाबा जी के चरणों पर नमस्कार अवश्य करवा दीजिए। >> उस समय हुजूर बाबा जी के भोजन का समय था। दास डर रहा था कि हुजूर को निवेदन कैसे करें। मगर सद्गुरु सहज ही कमरे से बाहर आ गए। उन्हें सामने देख हुजूर ने हंसते हुए पूछा। >> क्या बात है सेठ साहब। आजकल दर्शन नहीं होते। आगे से सेठ साहब अपनी विवशता बताने लगे। बाबा जी आपने इतनी कृपा कर दी है। छोटे से व्यापार से इतना बड़ा व्यापार दे दिया है कि सुबह-सुबह ही बच्चों के जागने से पहले

ही घर से चला जाता हूं और रात को इतनी देर से वापस आता हूं कि बच्चे भी सोए हुए ही मिलते हैं। मुझे समझ नहीं आती कि मैं सिमरन, सत्संग और सेवा किस समय करूं। बाबा जी झट समझ गए कि भक्त पर माया हावी हो चुकी है। आप जी ने फरमाया >> सेठ साहब मैं माया कमाने या प्रयोग करने से कभी मना नहीं करता। लेकिन माया को दासी बनाकर केवल इससे काम ही लिया करो। इसे मालिक बनाओगे तो यह उंगलियों पर नचाएगी। नारायण को छोड़कर इसकी दासी के पीछे भागोगे तो रब्बी बरकतें और जीवन के सुख दूर भागते जाएंगे। अगर बच्चों को भी समय नहीं दोगे, उनकी संगत और उनकी रुचियों का

ध्यान नहीं रखोगे और यह दिन रात एक करके इकट्ठी की हुई कमाई उन पर लुटाते रहोगे तो पता भी नहीं लगेगा कि किस समय यही बच्चे सिरदर्दी का कारण बन जाएंगे। फिर पछताने से कुछ नहीं बनने वाला। इसलिए माया के पीछे भागने से अच्छा है कि जिस दातार ने यह माया दी है, उसी के साथ ही नाता जोड़े रखो। साध संगत और परिवार के लिए भी समय निकालो ताकि माया को गुजरान बनाकर पारिवारिक और आत्मिक सुख प्राप्त कर सको। >> शेर साहब को ऐसा लगा जैसे आप जी ने उन्हें किसी गहरी नींद से जगाकर सच्चाई की रोशनी दिखा दी हो। उन्होंने बाबा जी के चरणों पर

शीश झुकाकर आशीर्वाद मांगा कि वह अब नित्य प्रति सत्संग सेवा सुमिरन करते रहे और सही जीवन लक्ष्य को समझकर अपना जीवन बिताएं। दास सोचने पर रिवश हो गया कि यह भी कैसा अद्भुत महात्मा है जो एक तरफ तो माया का त्याग करके भक्ति मार्ग में सारा समय लगा देने वालों को सेवा सिमरन सत्संग करते हुए माया कमाने और प्रयोग करने का उपदेश देता है ताकि वे समाज पर बोझ ना बने और दूसरी तरफ माया कमाने में दिन रात एक करने वाले लोगों को माया के मोह व लालच से ऊपर उठकर सेवा सत्संग सुमिरन करने की प्रेरणा देता थोड़ा और गहराई से सोचने पर समझ आ गई कि

यही धर्म का सच्चा रास्ता है। भक्ति का सही ढंग है और यह संतुलन ही लोक सुखी और परलोक सुहेला बनाता

लास्ट में

बेमुख मूर्ख सोच में डूबा सोच ने उसको मार दिया
कहे अवतार वह मरे न जन्मे जिसने नाम चिता लिया

चादर हो गई बहुत पुरानी चादर हो गई बहुत पुरानी अब तो सोच समझ अभिमानी
अजब जुलाह चादर बेनी सूत कर्म के तानी
सुरति निरति का भरना देना तब सबके मनमानी
चादर हो गई बहुत पुरानी चादर हो गई बहुत पुरानी अब तो सोच समझ अभिमानी

मैले दाग परे पापन के विषयन में लपटानी ज्ञान के साबुन लाए ना धो सत्संगती के पानी चादर हो गई बहुत पुरानी
चादर हो गई बहुत पुरानी अब तो सोच समझ अभिमानी

भई खराब बिगड़ गई सारी लोभ मोह में सानी
ऐसे ही ओढ़त उम्र गवाई भले बुरे नहीं जानी

शंका मत जानो जी अपने है यह वस्तु विरानी कहे कबीर यही राखी जतन से कहे कहे कबीर यही राखी जतन से फिर ये हाथ नहीं आई चादर हो गई बहुत पुरानी चादर हो गई बहुत पुरानी अब तो सोच समझ अभिमानी